COLLEGE NAME - SHKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDU.

AT - KRINDIH, KUMAHU, SASARAM.

CLASS. B. Ed. (1st Year)

PAPER - C-5

TOPIC - PROFESSIONAL dev. of teacher edu., Various Challanges.

DATE - 19-06.20

---

* व्यवसायिक विकास के शिक्षक शिक्षा /
* विभिन्न चुनौतियाँ।

Introdution:- शिक्षक का गुण समाज और राष्ट्र का दर्पण होता है। जिसके माध्यम से सामाजिक विकास एवं राष्ट्रीय प्रगति निर्धारित होती है।

दुसरे शब्दो मे,

राष्ट्रीय विकास का सर्वोत्तम स्रोत शिक्षा है, तथा विकास की सीमा शिक्षक कि गुणवत्ता पर निर्भर करती है, तभी कहा गया है।

"for the quality education there is a need of qualified teachers."

(

इस उक्ति को ध्यान मे रखते हुए, अन्य देशों की तरह भारत में भी शिक्षक प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है।

आधुनिक युग मे जो Knowledge ज्ञान अर्थ कौशल और भूमण्डलीकरण का है। शिक्षक कि गुणवत्ता और विशिष्ट गुणों का विकास जैसे प्रतिबद्धता क्षमता, और योग्यता आदि का विकास करना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हर शैक्षिक संस्थानों ने पाठ्यक्रमों और योजनाओं का संचालन एवं प्रतिपादन

P.T.O

Scanned with CamScanner

किया है, जिसका मुख्य उद्देश्य शिक्षक के व्यवसायिक क्षमता का विकास करना है।

* व्यवसायिक क्षमता (Professional Capasity) :- व्यवसाय का मतलब व्यक्ति द्वारा किसी काम को पूरी दक्षता और कुशलता के साथ किया जाना, जिसका संबंध जीविकोपार्जन से है, अर्थात एक व्यवसायी के रूप में शिक्षक में पूरी क्षमता दक्षता कुशलता का होना अति आवश्यक है।

इसे निम्नलिखित प्रकार से समझ सकते है।

$P = P^4$

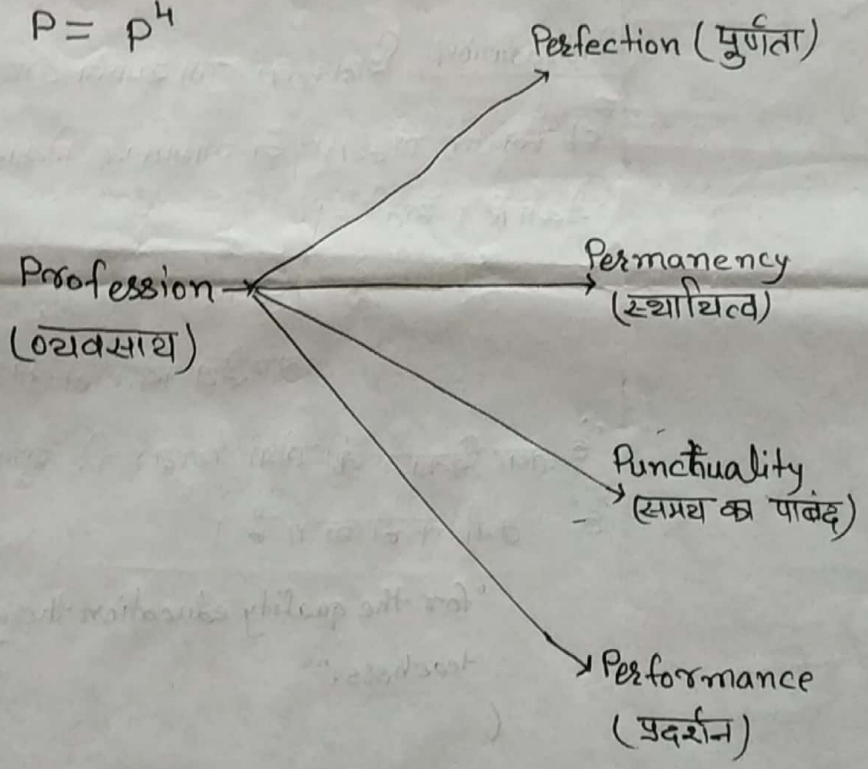

→ To Service any Profession = $S = S^4$ → Service (सेवा)

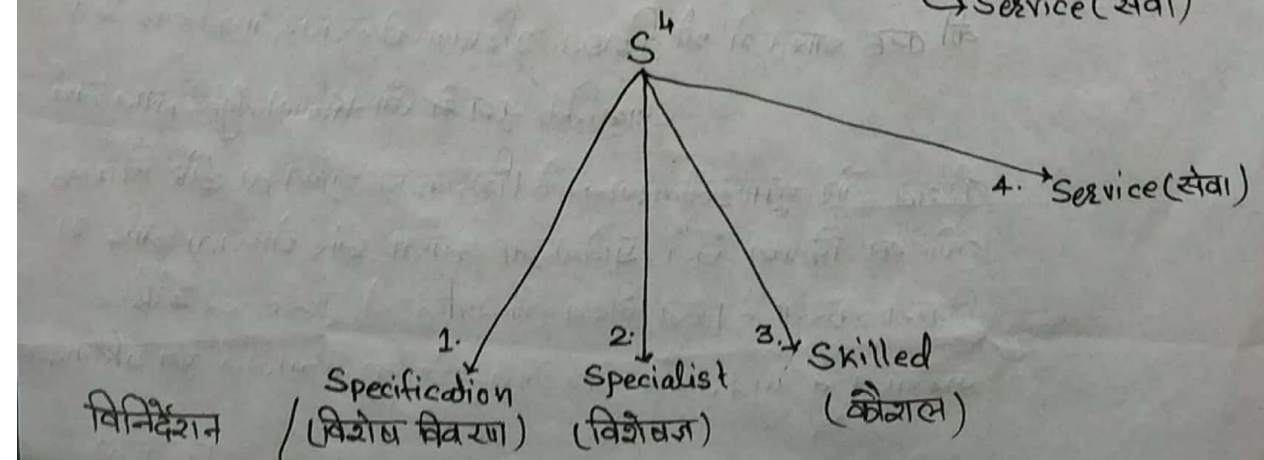

Scanned with CamScanner

उपरोक्त सभी गुणों की प्राप्ति के लिए शिक्षक में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है, जिससे शिक्षक का प्रदर्शन उच्च होगा।

1. विषय का ज्ञान होना।
2. संचार का कौशल होना।
3. बाल मनोविज्ञान का ज्ञान होना।
4. शिक्षण रणनीतियों का ज्ञान।
5. शैक्षिक तकनीकियों का ज्ञान।
6. शिक्षण विधियों का ज्ञान।
7. शिक्षण प्रतिबद्धता व क्षमता

शिक्षक के उपरोक्त गुणों के विकास के लिए शिक्षक शिक्षा में अनेकों कार्यक्रम चलाये जाते है।

जैसे -

(i) शिक्षक शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण।
(ii) सूक्ष्म शिक्षण।
(iii) समूह शिक्षण।
(iv) अनुस्थापन कार्यक्रम
(v) अनुकरण शिक्षण

* शिक्षक के व्यवसायिक विकास कि चुनौतियाँ :-

भारतीय संस्कृति में शिक्षक को जिन सम्मानित शब्दों से संबोधित किया गया है, वह श्लाघनीय है। लेकिन शिक्षक के प्रशिक्षण में अनेकों चुनौतियाँ है।

(i) अनउपयुक्त पाठ्यक्रम
(ii) पाठ्यक्रम का सही प्रकार से संचालन न होना।
(iii) अभिप्रेरणा की कमी।
(iv) व्यवसायिक उदासिनता

Scanned with CamScanner

(v) अराजकता ।
(vi) संसाधनों की कमी ।
(vii) अनउपयुक्त शिक्षण सामग्री ।

(i) अनउपयुक्त पाठ्यक्रम :- एक शिक्षक को प्रशिक्षित करने के लिए जो पाठ्यक्रम होना चाहिए वैसा पाठ्यक्रम नहीं बनाया जाता है, जिसके कारण शिक्षक का प्रशिक्षण जैसा होना चाहिए वैसा नहीं हो पाता।

(ii) पाठ्यक्रम का संचालन न होना :- दूसरी सबसे मुख्य चुनौती है कि पाठ्यक्रम को पहले तो अनउपयुक्त बनाया जाता है यानि जैसा पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है वैसा पाठ्यक्रम नहीं होता, इसके बाद इसे क्रमबद्ध रूप से संचालित भी नहीं किया जाता।

(iii) अभिप्रेरणा की कमी :- जैसे बच्चों को पढ़ाते समय अभिप्रेरित किया जाता है कि उसी प्रकार एक शिक्षक को भी प्रशिक्षण के समय अच्छी तरह से अभिप्रेरित करना चाहिए, जिससे वह अच्छा शिक्षक बन बालक का भविष्य बनाये।

(iv) व्यवसायिक उदासिनता :- कोई भी व्यवसाय के पीछे आर्थिक कारण होता है जिस व्यवसायी व्यवसाय करता है तो उसे कुछ लाभ होना चाहिए, जिससे वह स्वंय के आर्थिक रूप से खड़ा कर सके।

उसी प्रकार शिक्षक जैसे सम्मानित कार्य में उसके मेहनत के अनुसार उत्तम वेतन नहीं मिल पाता।

(v) अराजकता :- वर्तमान समय में सभी शिक्षक समान काम समान समय विद्यालय में देते है, लेकिन उन्हे विभिन्न श्रेणियों में जैसे नियमित, नियोजित, आदी में बांट गया है

(vi) संसाधनों की कमी - शिक्षक को प्रशिक्षित करने समय जिन साधन संसाधन की आवश्यकता पड़ती है वह पर्याप्त नहीं है, जिससे उसके प्रशिक्षण में कठिनाई होती है।

Scanned with CamScanner

(vii) अनउपयुक्त शिक्षण सामग्री :- जब शिक्षक को प्रशिक्षित किया जाता है तो उन्हें तरह-तरह के शिक्षण सामग्री के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाता है, जिसे सीख कर वह अपने प्रशिक्षण कार्य को भलिभाँति करते है। लेकिन ये सामग्री भी सही से नहीं मिलती जिसके कारण शिक्षक अपने व्यवसाय में कौशल प्राप्त नहीं कर पाते।

Scanned with CamScanner